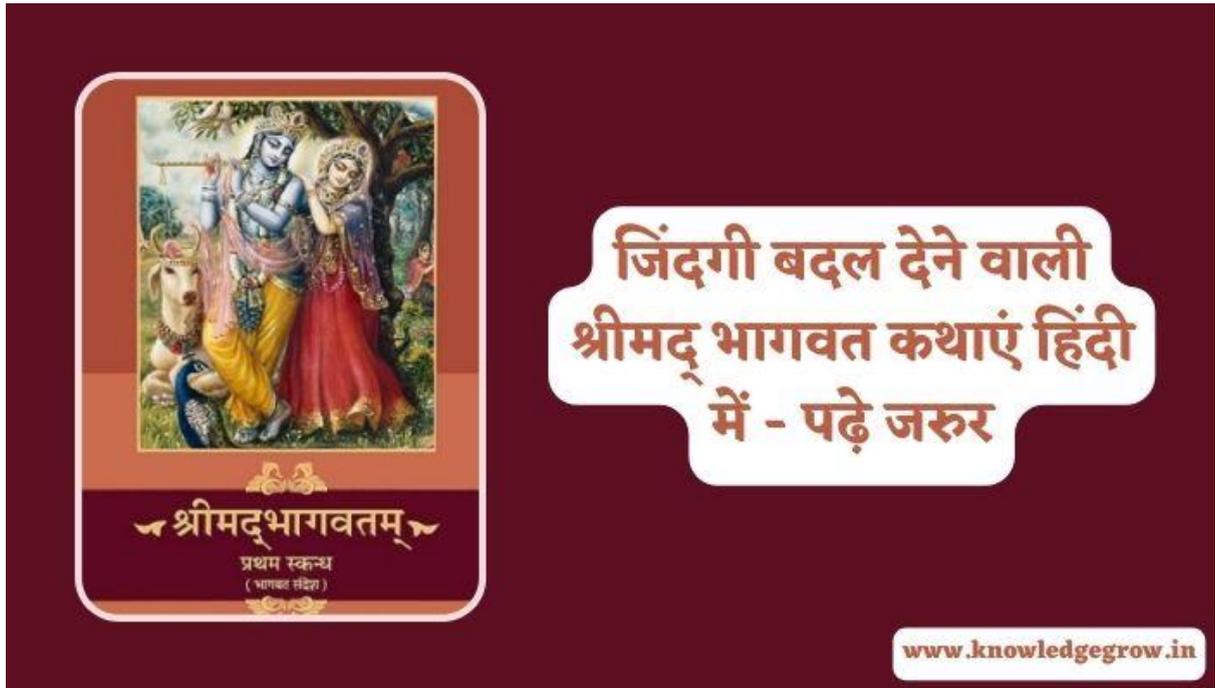


Top 5 Shrimad Bhagwat Katha in Hindi | श्रीमद् भागवत कथा हिंदी में

नमस्कार मेरे प्यारे भाईयों और बहनों, आप सभी का हमारे नॉलेज ग्रो स्पिरिचुअल ब्लॉग पर पर स्वागत है। दोस्तो आज का यह आर्टिकल आप सभी के लिए बहुत ही स्पेशल और जीवन को बदल देने वाला साबित होने वाला है, इसलिए इस आर्टिकल को अंत तक जरूर पढ़िए।

दोस्तो अगर आप इस आर्टिकल को अंत तक पढ़ते हैं, तो आपको इस आर्टिकल के जरिए बहुत कुछ सीखने को मिलने वाला है। जो आपकी जिंदगी को बदल सकता है। इसलिए इस “**Top 5 Shrimad Bhagwat Katha in Hindi**” आर्टिकल को अंत तक अवश्य पढ़िए। तो बिना समय को गवाए चलिए आर्टिकल की शुरुआत करते हैं।



जिंदगी बदल देने वाली
श्रीमद् भागवत कथाएं हिंदी
में - पढ़े जरूर

www.knowledgegrow.in

Top 5 Shrimad Bhagwat Katha in Hindi Me | श्रीमद् भागवत कथा हिंदी में

दोस्तो इस आर्टिकल के जरिए मैं आपके साथ जो 5 भागवत कथा की कहानियां हिंदी में शेयर करने वाला हु, उन कहानियों को पढ़ने के बाद आपके मुंह से एक ही तारीफ निकलेगी की “वाह भाई वा क्या कहानी थी और काश मैंने इन कहानियों को पहले पढ़ लिया होता।”

दोस्तो श्रीमद् भागवत कथा की कहानियां हिंदी में पढ़ने से पहले आपको यह जानना होगा की भागवत कथा का महत्व क्या है? और श्रीमद् भागवत कथा पढ़ने से क्या होता है? तो सबसे पहले जानते हैं कि श्रीमद् भागवत कथा का महत्व क्या है?

श्रीमद् भागवत कथा का महत्व क्या है? - Importance of Bhagwat Katha in Hindi

दोस्तों श्रीमद् भागवतम पुराण भगवान श्री कृष्ण का ग्रंथावतार है और श्रीमद् भागवतम भगवान श्री कृष्ण का साक्षात स्वरूप भी है। कैसे आइए जानते हैं... पहले दो स्कन्द भगवान श्री कृष्ण के चरण हैं, तीसरा और चौथा

स्कन्द भगवान की जांगे है और पाचवा स्कन्द भगवान का उदर है। छटा स्कन्द भगवान का वक्षस्थल है और सातवा और आठवा स्कन्द भगवान की भुजाएं है।

नववा स्कन्द भगवान का गला है और दशम स्कन्द भगवान का चेहरा है, और उसमे रासलीला के चैप्टर्स भगवान की सुन्दर मुस्कान है। ११ वा स्कन्द भगवान का ललाट है और १२ स्कन्द भगवान के सर पे जो वृन्दावन के फलावर्स की जो पगड़ी है ना वो १२ स्कन्द है।

दोस्तों इस ग्रंथ में भगवान श्री कृष्ण की कहानियाँ लिखी हुई है और इसके साथ ही जीवन को बदल देने वाले [लाइफ लेसंस](#) भी इस पुराण से हमें सिखने को मिलते है। और ये ग्रंथ खास करके कलियुग के लोगो के लिए लिखा हुआ है, ताकि कलियुग के लोगो के अन्दर कृष्ण प्रेम जागृत हो सके।

श्रीमद् भागवत कथा पढ़ने से क्या होता है?

जो भी व्यक्ति श्रीमद् भागवत कथाओ को पढ़ता है, उसके अन्दर कृष्णप्रेम जागृत हो जाता है। और वो व्यक्ति कलियुग के विनाशकारी प्रभावों से बच जाता है। यानि की उसके अन्दर से काम , क्रोध, लोभ , मोह, मद, मात्सर्य इन सभी मानसिक दोषों से वह व्यक्ति मुक्त हो जाता है। इसलिए दोस्तों श्रीमद् भागवत कथाओ को एक बार अवश्य पढ़िए।

प्रभु का ध्यान - Shrimad Bhagwat Katha in Hindi With Moral

दोस्तो एक बार गौलोक धाम में राधा रानी जी ने भगवान श्री कृष्ण जी से पूछा कि हे श्याम सुंदर! कंस आपका सगा मामा होते हुए भी आपके माता पिता को बहुत ही घोर पीड़ा देता था। साथ ही आपका और साधु संतो का मजाक भी उड़ाया करता था।

अपने किसी न किसी असुर को भेजकर आपको जान से मार देने का प्रयास भी करता रहता था। तो फिर भी उस महा पापी में ऐसे कौन से ऐसे पुण्य थे की, आपकी हाथों से उसे परम मोक्ष प्राप्त हुआ? फिर भगवान श्री कृष्ण ने मुस्कराते हुए उत्तर दिया की,

हे राधे, मेरे सगे मामा कंस जो कुछ भी करते थे या सोचते थे, वो सब मेरे ही बारे में ही होता था। चाहे द्वेष, क्रोध या भय के कारण ही क्यों न हो, लेकिन वो निरंतर मेरा स्मरण किया करते थे। इसलिए जो व्यक्ति मेरा निरंतर स्मरण करेगा, उसे मैं मोक्ष ही दूंगा। चाहे वह मेरा विरोधी ही क्यों न हो।

दोस्तो इसलिए श्रीमद् भागवत पुराण के अंत में एक बहुत ही महत्वपूर्ण श्लोक आता है और वो श्लोक है।

नामसंकीर्तन यस्य सर्वपापप्रनाशनम् । प्रणामो दुःखशमनस्त नमामि हरि परम्।

अर्थात् हम उन हरि को प्रणाम करते हैं जिनके नाम संकीर्तन से भी सभी प्रकार के पापो का नाश होता है और सारे दुःख और कष्ट दूर हो जाते हैं।

दोस्तो कंस तो भगवान श्री कृष्ण से द्वेष रखते थे, लेकिन फिर भी उनको भगवान श्री कृष्ण के द्वारा मुक्ति मिल गई। लेकिन अगर हम भगवान श्री कृष्ण से प्रेम करेंगे और उनकी भक्ति करेंगे, तो सोचिए की हमें क्या नहीं मिल सकता। इसलिए दोस्तो हमें श्री हरी का भक्त बनना चाहिए और उनकी भक्ति करनी चाहिए। क्योंकि वो ही है जो हमें इस जन्म मृत्यु के कष्ट से मुक्ति दिला सकते हैं और हमारा उद्धार कर सकते हैं।

- जरूर पढ़े: [सारी चिंताएं दूर कर देंगी भगवान श्री कृष्ण की ये कहानी](#)
- जरूर पढ़े: [सफलता दिलाने वाले भगवान श्री कृष्ण के 10 उपदेश. आज से ही करदे अपनी जीवन में अपनाना शुरू...](#)

शांति कहा मिलेगी - Shrimad Bhagwat Katha Hindi Me

दोस्तों एक बार भगवान विष्णु सभी जीवों को कुछ न कुछ भेंट कर रहे थे। सभी जीव भेंट को स्वीकार करते हैं और खुशी खुशी अपने निवास स्थान के लिए प्रस्थान करते हैं। जब सभी जीव वहा से चले गए तो माता लक्ष्मी ने भगवान से कहा कि हे नाथ! आपने सभी जीवों को कुछ न कुछ दिया और अपने पास कुछ भी नहीं रखा है, लेकिन एक चीज जो आपने अपने पैरो के नीचे छिपा लिया हुआ है, वो क्या है?

फिर भगवान ने माता लक्ष्मी जी से कहा कि हे देवी मेरे पैरो के नीचे “शांति” है। शांति को मैंने किसी को भी नहीं दिया, क्योंकि सुख सुविधाएं तो सभी के पास हो सकती हैं, लेकिन शांति तो किसी दुर्लभ व्यक्ति के पास ही होगी। यह मैं सबको नहीं दे सकता, क्योंकि जो मेरी प्राप्ति के लिए तत्पर होगा और जिसकी चेष्टाएं मुझ तक पहुंचने की होंगी, उसी को ही शांति मिलेगी।

भगवान श्री हरी (भगवान विष्णु) की आज्ञा लेकर के शांति ने माता लक्ष्मी जी से कहा कि हे जगत माता, श्री हरी ने मुझे अपने पैरो के नीचे नहीं छिपाया है, बल्कि मैं खुद ही उनके पैरो के नीचे छिप गई हु। इसलिए शांति तो सिर्फ श्री हरी के चरणों के नीचे ही जीव को मिलेगी, अन्यथा कही नहीं।

दोस्तो व्यक्ति सारी सुख संपत्ति से सुसज्जित हो, लेकिन अगर उसके पास शांति न हो, तो उसकी सारी संपत्ति व्यर्थ हो जाती है। इसीलिए स्वयं सुख समृद्धि की जननी माता लक्ष्मी जी भी शांति के प्राप्ति हेतु श्री हरी के चरणों की सेवा हमेशा करती रहती है।

- जरूर पढ़ें: [कृष्ण भक्त संत मीराबाई का जीवन परिचय](#)
- जरूर पढ़ें: [ये 7 गलतियाँ कर देती हैं मनुष्य का जीवन बर्बाद, जानिए कौन सी है वो?](#)

कथा भक्त प्रल्हाद महाराज की - भागवत कथा की कहानियां

दोस्तो सतयुग में प्रल्हाद महाराज का जन्म हुआ था और वो भगवान विष्णु के बहुत बड़े भक्त थे। उनके पिता हिरण्यकश्यपु एक असुर थे और उन्होंने ब्रह्माजी का कई वर्षों तक कठोर तप किया और उसकी तपस्या से प्रसन्न होकर ब्रह्माजी ने उसे अजय अमर होने का वरदान भी दिया।

हिरण्यकश्यपु को ऐसा वरदान मिला था की उसे ना कोई घर में मार सकता था और ना ही बाहर, ना अस्त्र से ना शस्त्र से, ना दिन में मार सकता था न रात में, न मनुष्य मार सकता था न पशु, न आकाश में मार सकता था, न पृथ्वी पर। इस वरदान गलत फायदा उठाकर उसने सभी देवी देवताओं को मारकर स्वर्ग से भगा दिया था और स्वर्ग पर उसने अपना कब्जा कर लिया।

अब वो सम्पूर्ण लोकों का अधिपति हो गया था। सभी देवी देवता हिरण्यकश्यपु को किसी भी तरीके से पराजित नहीं कर पा रहे थे। जब हिरण्यकश्यपु तप कर रहा था, तब देवताओं ने असुरों पर आक्रमण किया हुआ था। तब सब असुर वहा से भाग गए थे। तब देव ऋषि नारद मुनि ने हिरण्यकश्यपु की पत्नी कायदू को अपने आश्रम में शरण दी हुई थी।

दोस्तों तब उस समय प्रल्हाद महाराज कायदू देवी के गर्भ में थे। उसी समय से देव ऋषि नारद मुनि जी के उपदेशों का प्रभाव गर्भ में पल रहे प्रल्हाद महाराज पर पड़ रहा था। दोस्तो इसलिए कहा जाता है की गर्भवती महिलाओं को भी बहुत सावधान रहना चाहिए कि वे क्या खा रही है और क्या सुन रही है और क्या बोल रही है। क्योंकि इन सभी चीजों का सीधा सीधा प्रभाव गर्भ में पल रहे बच्चे पर भी पड़ता है।

और जब हिरण्यकश्यपु वापस आया तो प्रल्हाद को आचार्य शुक्र के दोनों पुत्रों के पास भेज दिया। उस प्रतिभाशाली बालक ने धर्म, अर्थ, काम की शिक्षा सम्यक रूप से प्राप्त की। परंतु जब हिरण्यकश्यपु ने उससे पूछा की बताओ तुमने क्या सिखा है? तो भक्त प्रल्हाद ने श्रवण, कीर्तन, स्मरण, पादसेवन, अर्चन, वंदन, दास्य, सख्य और आत्मनिवेदन इन ९ विद्या भक्ति को ही सर्वश्रेष्ठ बताया।

ये सब सुनकर हिरण्यकश्यपु अत्यंत क्रोधित हुआ और उसने अपने सैनिकों से कहा कि ये मेरे शत्रु श्री विष्णु का भक्त है, इसलिए इसे अभी के अभी मार डालो। अहंकार में चूर हिरण्यकश्यपु को ये बर्दाश्त ही नहीं हुआ क्योंकि उसे छोड़कर और उसके होते हुए भी किसी ओर की उपासना की जा रही है।

भक्त प्रल्हाद को विभिन्न तरीकों से प्रताड़ित करने का प्रयास कराया गया। लेकिन भगवान विष्णु की कृपा से वो छोटा सा और निसाहय दिखने वाला बालक हर बार बच गया। इससे हमें बहुत ही महत्वपूर्ण सीख समझ सकते हैं। और वो है की यदि हम भी पूर्ण रूप से भगवान पर आश्रित होते हैं, तो वो सांसारिक कष्टों से हमारी रक्षा जरूर करते हैं।

तो भक्त प्रल्हाद की विष्णु भक्ति से परेशान होकर के हिरण्यकश्यपु ने उसे जान से मारने की कोशिश की और भगवान की उपस्थिति को मेहल की खंबे में भी होने की इस बात को जब उसने ललकारा, तब स्वयं भगवान विष्णु नरसिंह अवतार में प्रकट हो गए।

फिर नरसिंह भगवान ने हिरण्यकश्यपु को राजभवन की चौकट पर अपने गोद में लेटाया और अपने उज्वल नाखूनों से उस असुर हिरण्यकश्यपु का पेट चीर डाला। इस प्रकार ब्रह्मा जी द्वारा दिए गए वरदान का सम्मान भी करते हुए भगवान श्री नरसिंह देव ने हिरण्यकश्यपु का वध कर डाला, और अपने अनन्य भक्त प्रल्हाद का संरक्षण भी किया।

तो दोस्तो इस कहानी से हमने यह सीखा की नरसिंह भगवान क्यों प्रकट हो गए, केवल और केवल अपने भक्त की वाणी को सच करने के लिए की भगवान कण कण में विराजमान होते हैं और भक्त प्रल्हाद की रक्षा करने के लिए प्रकट हो गए।

और संसार के हम सब लोगो को ये संदेश देने के लिए “यदि श्रद्धा अटल हो और निष्ठा दृढ़ हो भगवान अपने भक्त से मिलने के लिए अवश्य आते हैं। चाहे उसके लिए उन्हें एक खंबे से ही क्यों न प्रकट होना पड़े और चाहे भक्त को हानि पहुंचाने वाला श्रृष्टि के रचयेता ब्रह्मा जी से अमर होने वरदान लेकर भी क्यों न आया हो। फिर भी वे आते हैं और अपने भक्तों की रक्षा स्वयं करते हैं।

- जरूर पढ़ें: [सारी चिंताएं दूर कर देंगी भगवान श्री कृष्ण की ये कहानी](#)
- जरूर पढ़ें: [भगवान श्री कृष्ण के ये 10 उपदेश आपकी जिंदगी बदल देंगे](#)

परमात्मा पर भरोसा - Shrimad Bhagwat Katha in Hindi

एक बार एक चिड़िया ने शिकायत की, हे परम पिता परमेश्वरा, बड़ी मुश्किल से मैंने यह घोंसला बनाया हुआ था, और आपने तूफान को भेज दिया और मेरा घर उजड़ गया। फिर ऊपर से आवाज आई की, तेरे घोंसले में साप आया था तुझे खाने के लिए। इसलिए मैंने तूफान भेजा ताकि तुम जाग सको और उड़ जाओ और तुम्हारी जान सुरक्षित रह सके।

दोस्तो हमारी जिंदगी में कितनी मुसीबते आती हैं और हमको पता भी नहीं होता की हमारा परमात्मा हमें किस तरह परेशानी से बचाता है। अगर आपको ऐसा लगता है कि परमात्मा आपको कष्ट के पास ले आए हैं, तो भरोसा रखिए क्योंकि वो आपको कष्ट के पार भी ले जायेंगे।

- जरूर पढ़ें: [भगवद् गीता के ये 10 उपदेश आपकी जिंदगी बदल देंगे](#)

विश्वास की जीत - श्रीमद् भागवत कथा हिंदी में

एक संत कुएं पर स्वयं को जंजीर से लटकाकर ध्यान किया करते थे। और कहते थे कि जिस दिन ये जंजीर टूटेगी उस दिन मुझे प्रभु श्री कृष्ण मिल जायेंगे। पूरा गांव उनकी भक्ति की और तपस्या की प्रशंशा करता था। फिर एक व्यक्ति ने यह सोचा कि मैं भी प्रभु श्री कृष्ण के दर्शन करू।

इसलिए उसने भी अपने आपको रस्सी से बांधकर कुएं में लटका दिया और भगवान श्री कृष्ण का ध्यान करने लगा। कुछ समय बाद जब रस्सी टूट गई तब भगवान श्री कृष्ण ने उसे अपने गोद में ले लिया और उसे अपना दर्शन भी दिया।

दर्शन करने के बाद उस व्यक्ति ने भगवान श्री कृष्ण से पूछा कि हे श्याम सुंदर आपने तो मुझे इतने जल्दी दर्शन दिए जब कि वे महात्मा जी वर्षों से आपकी प्रतीक्षा कर रहे हैं, आपने उन्हें अभी तक अपना दर्शन क्यों नहीं दिया?

फिर भगवान श्री कृष्ण मुस्कुराकर बोले कि वो कुएं पर लटकते जरूर हैं, लेकिन पैर को लोहे की जंजीर से बांधकर। उन्हें मुझसे अधिक विश्वास जंजीर पर है, लेकिन तुमने स्वयं से अधिक विश्वास मुझ पर किया, इसलिए मैं आ गया। दोस्तो इसी प्रकार अगर हम सच्ची एवम पूर्ण विश्वास से भगवान को पुकारेंगे तो, वे अवश्य आयेंगे और हमें अपना दर्शन भी देंगे।

- जरूर पढ़ें: [कृष्ण भक्त संत मीराबाई का जीवन परिचय](#)
- जरूर पढ़ें: [सारी चिंताएं दूर कर देंगी भगवान श्री कृष्ण की ये कहानी](#)

सत्संगति का फल - संपूर्ण भागवत कथा इन हिंदी में

एक भंवरा हर रोज फूलों के बाग के पास से गुजरता रहता था। वहां से एक गंदा नाला भी गुजरता था और उस गंदे नाले में एक कीड़ा भी रहता था। एक दिन उस भंवरे की नजर उस कीड़े पर पड़ती है, और उसने उस नाली के कीड़े से पूछा कि तुम इस गंदी जगह पर क्यों रहते हो?

नाले के कीड़े ने जवाब दिया कि यह मेरा घर है। फिर भंवरे ने कीड़े से कहा कि चलो मैं तुम्हें जन्नत की सैर कराता हूँ, इसलिए तुम मेरे साथ चलो और मुझसे दोस्ती कर लो। फिर भंवरे ने कहा कि मैं कल तुमसे मिलने के लिए आऊंगा तब तुम मेरे साथ चलना।

अगले दिन भंवरा उस कीड़े को अपने साथ अपने कंधे पर बिठाकर बाग में ले जाता है, और उस कीड़े को एक फूल पर बिठाकर खुद रस पीने के लिए चला जाता है। भंवरा श्याम को उस कीड़े को वापस घर ले जाना भूल जाता है और जिस फूल में कीड़ा बैठा हुआ था, वो फूल श्याम को बंद हो जाता है।

तो वो कीड़ा भी उस फूल में ही बंद हो जाता है। अगले दिन माली आता है और उन फूलों को तोड़कर ले जाता है। और उन फूलों की माला बनाकर बाके बिहारी जी के मंदिर भेज देता है। वही माला बिहारी जी के गले में पहना दी गई जाती है। सारे दिन के बाद उस माला को यमुना में प्रवाहित कर दी गई। वो कीड़ा यह सब देख रहा था।

फिर वो कीड़ा कहता है कि वाह रे भंवरे तेरी दोस्ती ने मुझे भगवान का स्पर्श करवा दिया। और अंतिम समय में मुझे यमुना में प्रवाहित करवा दिया गया। दोस्तो ये भंवरा और कोई नहीं बल्कि जीवन में मिला कोई सत्संगी पुरुष है, जो हमें भव बंधन के सागर से बहुत दूर ले जाने में मदद करता है। ऐसा सत्संगी मित्र हमें भगवान श्री कृष्ण की कृपा से ही मिलता है।

दोस्तो यह थी वो 5 श्रीमद् भागवत कथाएं हिंदी में, आप सभी को ये सभी श्रीमद् भागवत कथाएं कैसी लगी और इन कहानियों से आपको नया क्या सीखने को मिला? यह हमें नीचे दिए गए कॉमेंट बॉक्स में कॉमेंट करके जरूर बताइए। साथ ही इस आर्टिकल को अपने दोस्तों के साथ अवश्य शेयर कीजिए।

दोस्तों "Top 5 Shrimad Bhagwat Katha in Hindi" आर्टिकल में सिर्फ इतना ही, दोस्तो अगर आपको यह आर्टिकल पसंद आया होगा और आपके लिए उपयोगी साबित हुआ होगा? तो इस आर्टिकल को अपने दोस्तों के साथ अवश्य शेयर कीजिए।

साथ ही इस आर्टिकल के ऊपर आपके क्या विचार है, यह भी हमें नीचे दिए गए कॉमेंट बॉक्स में कॉमेंट करके जरूर बताइए। दोस्तों हमारे साथ जुड़े रहने के लिए आप हमारे नॉलेज ग्रो टेलीग्राम चैनल और व्हाट्सएप ग्रुप को अवश्य ज्वाइन कीजिए। ज्वाइन करने की लिंक हमने नीचे दी हुई है।

- WhatsApp Group: [अभी ज्वाइन करें](#)
- Telegram Channel: [अभी ज्वाइन करें](#)
- Instagram Page: [अभी फॉलो करें](#)

दोस्तों हम फिर मिलेंगे ऐसे ही एक इंटरस्टिंग आर्टिकल के साथ, तब तक के लिए आप जहां भी रहिए खुश रहिए और खुशियां बांटते रहिए।

आपका बहुमूल्य समय हमें देने के लिए दिल से आभार 🙏🙏🙏